# प्रवास
## समस्या एवं निदान

डॉ. दीपक कुमार टम्टा
डॉ. श्वेता चनियाल

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली ( भारत )

द्वारा प्रकाशित

**अखण्ड पब्लिशिंग हाउस**

एल-9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.in

SAMPLE

## प्रवास : समस्या एवं निदान

Prawas : Samasya Evam Nidan

*Edited by Dr. Deepak Kumar Tamta, Dr. Shweta Chaniyal*

आईएसबीएन : 978-81-19098-99-6
सर्वाधिकार : © सम्पादकगण
संस्करण : प्रथम, 2024

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

**भारत में प्रकाशित**

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

# आमुख

प्रवास जीवन का सत्य है वर्तमान ही नहीं अपितु प्राचीन समय से ही प्रवास होता चला आया है, इतिहास का अवलोकन करें तो विभिन्न देशों प्रवास की अनेक घटनाएँ सामने आती हैं। प्रवास का तात्पर्य अपने सामान्य निवास स्थान से किसी अनय स्थान पर रहना है प्रवास का परिभाषित करते हुए डेविड ही ने लिखा है कि "अपने सामान्य रहने के स्थान से किसी दूसरे स्थान पर रहना प्रवास है" प्रवास को प्रभावित करने वाले कारकों में मुख्यत: आकृषक तत्व (Pull Factor) तथा प्रत्याकर्षणक तत्व (Push Factor) हैं। आकृषक तत्व के अन्तर्गत रोजगार के अच्छे अवसर, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, आय वृद्धि के हेतु साधन तथा उत्तम जलवायु आदि महत्वपूर्ण हैं जब कि प्रत्याकर्षणक तत्वों में रोजगार के अवसरों की कमी, शिक्षा, स्वास्थ्य आवास प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण सुविधा का अभाव उन्नति के अवसरों का अभाव, असुरक्षा की भावना इत्यादि तत्व सम्मिलित हैं अत: स्पष्ट रूप से देखा जाये तो प्रवास को प्रोत्साहित करने वाले तत्वों में आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक, जनांकिकी, सांस्कृतिक व राजनैतिक तत्व महत्वपूर्ण हैं।

राज्य उत्तराखण्ड जो कि वर्ष 2000 में अस्तित्व में आया जो कि एक हिमालयी राज्य है यहाँ पर 02 मण्डल (कुमांऊ एवं गढ़वाल) हैं तथा 13 जनपद हैं तथ इन 13 जनपदों में अधिकांश जनपद पर्वतीय सम्भाग में हैं। राज्य की कुल जनसंख्या का 69.8 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र एक 30.02 प्रतिशत नगरीय क्षेत्र में निवास करती है। यहाँ की अर्थव्यवस्था को मनीऑर्डर इकॉनोमी कहा जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों से निरन्तर व्यक्ति बाहर के स्थानों को पलायन कर रहे हैं, ये प्रवास ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर राज्य से दूसरे राज्यों की तरफ राज्य विदेशों की ओर किया जा रहा है कई गाँव पलायन के कारण खाली हो चुके हैं जिसका प्रभाव उत्तराखण्ड राज्य की अर्थव्यवस्था पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है आर्थिक पक्ष के अतिरिक्त राज्य के भौगोलिक, सामाजिक व सांस्कृतिक आदि पक्षों पर इसके प्रभाव दृष्टिगत हो रहे है। ग्राम्य विकास एवं पलायन निवारण आयोग उत्तराखड के अनुसार वर्ष 2018 के

बाद राज्य में अस्थायी व स्थायी पलायन पर दृष्टि डाली जाये तो नजदीकी कस्बों में पलायन 35.47 प्रतिशत जनपदों से मुख्यालय में 17.86 प्रतिशत, राज्य के अन्य जनपदों में पलायन 23.6 प्रतिशत तथा राज्य से बाहर 21.80 प्रतिशत एवं देश से बाहर पलायन 1.26 प्रतिशत हैं। राज्य में होने वाले प्रवास की स्थिति पर रोक लगाने हेतु प्रयास करना अत्यन्त आवश्यक है नहीं तो राज्य की जनसंख्या प्रवास की प्रवृत्ति की ओर अग्रसर होती चली जायेगी।

प्रस्तृत ग्रन्थ "प्रवास: समस्या व निदान" में विभिन्न विद्वानों ने अपने शोध पत्रों के माध्यम से इस स्थिति को उजागर करने का प्रयास किया है कि पलायन या प्रवास के कारण किस प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। एवं किन क्षेत्रों का विकास करके हम इन चुनौतियों समस्याओं का समाधान करने में सफल हो सकते हैं पुस्तक में विद्वानों के द्वारा प्रवास की अवधारणा पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है जिसमें सम्पूर्ण भारत में प्रवास की स्थिति को समझाने का प्रयास किया गया है तथा प्रवास की चुनौतियाँ एवं समाधान के विषय में अपने विचार को व्यक्त करते हुए महामारी कोविड-19 के समय में प्रवास की स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है, साथ ही विद्वानों ने साहित्य में पलायन के चित्रण को भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय जनपदों में प्रवास से होने वाली समस्याओं को उजागर करने के साथ-साथ पलायन रोकने हेतु सरकारी प्रयासों एवं विद्वानों ने स्वयं के सुझाव भी प्रस्तुत किये है इसके अतिरिक्त ग्रामीण पलायन उनके आर्थिक प्रभाव व समाधान, जनसंख्या प्रवास, पर्यटन व प्रवास तथा उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में पलायन की चुनौतियों एवं परिणाम तथा पलायन को रोकने हेतु विविध आयाम स्वरोजगार एवं लघुउद्योग आदि विषयों पर गहन अध्ययन करने के उपरान्त विद्वानों ने लेख के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किये हैं।

प्रवास से होने वाली समस्याएँ जहाँ व्यक्तिगत रूप से प्रभावित करती हैं तो वहीं सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती हैं। अत: आवश्यकता है कि इन समस्याओं के समाधान हेतु प्रयास किये जाये, इसके अतिरिक्त राजकीय स्तर पर भी विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन करके पलायन या प्रवास को रोका जा सके। पुस्तक के माध्यम से इन्ही तथ्यों को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

# आभार

सर्वप्रथम हम उन सभी विद्वानों के प्रति हृदय से विशेष रूप से आभारी है जिन्होंने हमारे अनुरोध पर इस ग्रन्थ "प्रवासः समस्या एवं निदान" हेतु अपने शोध पत्र अत्यन्त व्यस्तताओं के बावजूद भी अति शीघ्र प्रेषित किये हम अन्तः करण से इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि आपके स्नेहपूर्ण उत्साहवर्द्धन व सहयोग के बिना यह ग्रन्थ शायद ही पूर्ण हो पाता।

एक लेखक एवं सम्पादक के रूप मे हमारी सफलता का श्रेय हमारे गुरूजन व शोध निर्देशक प्रो० एच० सी० जोशी विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा एवं प्रो० निर्मला बोरा अर्थशास्त्र विभाग डी०एस० बी० परिसर कुमांऊ विश्वविद्यालय नैनीताल को जाता है जिनका हम सदैव हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। इसके अतिरिक्त प्रो० रजनीश पाण्डे विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग कुमांऊ विश्वविद्यालय नैनीताल तथा प्रो० पदम सिंह विष्ट, डी०एस०बी० परिसर कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। साथ ही डॉ० लता आर्या सहायक प्राध्यापक राजकीय महाविद्यालय काण्डा बागेश्वर के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, इसके अतिरिक्त संकायाध्यक्ष कला संकाय प्रो० जे०एस० बिष्ट एस०एस०जे० परिसर अल्मोड़ा एवं प्रो० इला साह विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र एस०एस०जे परिसर अल्मोड़ा, प्रो० प्रीति आर्या, विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, डॉ० ललित जोज़ी (योगी) पत्रकारिता विभाग एस०एस०जे० परिसर अल्मोड़ा तथा डॉ० पी०के० भट्ट विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग परिसर पिथौरागढ़ सोबन सिह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा साथ ही डॉ० विजेता सत्याल अर्थशास्त्र विभाग परिसर अल्मोड़ा एवं डॉ० आरती परिहार अर्थशास्त्र विभाग परिसर अल्मोड़ा, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं। इसके अतिरिक्त श्रीमती अल्का आर्या सहायक प्राध्यापक शिक्षा शास्त्र, राजकीय महाविद्यालय पाटी चम्पावत

SAMPLE

एवं केलाश कुमार आर्या, प्रधानाचार्य राजकीय पॉलीटेक्निक कॉलेज कपकोट बागेश्वर के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने समय-समय पर अनेक सुझावों के द्वारा हमारा मार्गदर्शन किया। परमात्मा की असीम कृपा के साथ हम अपने-अपने माता-पिता (स्व० श्री० जीवन लाल टम्टा एवं श्रीमती कमला टम्टा), (स्व० श्री पी० आर० चनियाल एवं स्व० श्रीमती देवकी चनियाल) के प्रति नतमस्तक हैं जिनकी स्नेहमयी प्रेरणा, उपलब्ध आर्शीवचनों के फलस्वरूप ही हम इस कार्य को सफलता पूर्वक सम्पन्न करने में सफल हो सके जिनके हम सदैव आजीवन आभारी रहेंगे।

अंततः टाइपिंग हेतु विकास विश्वकर्मा जी एवं पंकज कुमार जी तथा कम्प्यूटर सैटिंग, एडिटिंग, डिजाइनिंग को जिस लगन व उत्कृष्ट कौशल के साथ अखण्ड पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली द्वारा सम्पन्न किया गया। उसके लिए वह निश्चित ही प्रसंशा के अतिरिक्त धन्यवाद के पात्र हैं जिनका हम अत्यंत आभार व्यक्त करते हैं।

**डॉ० दीपक कुमार टम्टा**
**डॉ० श्वेता चनियाल**

नमूना • SAMPLE

# अनुक्रमणिका


**आमुख** **iii**

**आभार** **v**

**सहायक सूची** **ix**

1. प्रवास की अवधारणा का विश्लेषण 1
*—डॉ० योगेश मैनाली, प्रो० इला साह*

2. प्रवासः समस्याएँ, चुनौतियाँ एवं समाधान 12
*—प्रो० इला साह, डॉ० ललित चंद्र जोशी*

3. हरिसुमन बिष्ट के कथा साहित्य में पलायन का चित्रण 26
*—प्रो० प्रीती आर्या, डॉ० आशा शैली*

4. प्रवास एवं स्वरोजगार (उत्तराखण्ड के विशेष संदर्भ में) 31
*—डॉ० श्वेता चनियाल*

5. कुमांऊ मण्डल के पर्वतीय जनपदों से पलायनः
एक समस्या 41
*—सचिन कुमार, डॉ० दीपक कुमार टम्टा*

6. ग्रामीण पलायनः आर्थिक प्रभाव एवं समाधान
(उत्तराखण्ड के विशेष सन्दर्भ में) 50
*—मोहित खर्कवाल*

7. जनसंख्या प्रवास : एक भौगोलिक अध्ययन 58
*—डॉ0 पी. के. भट्ट, सतीश चन्द्र जोशी*


SAMPLE

8. पर्वतीय क्षेत्रों से पलायन को रोकने में पर्यटन की भूमिका 70
*—विपिन चन्द्र टम्टा, अलका आर्या*

9. पलायन को रोकने में लघु एवं कुटीर उद्योगों की भूमिका (उत्तराखण्ड के विशेष संदर्भ मे) 79
*—डॉ० लता आर्या, डॉ० बलदेव राम*

10. Tourism and Migration in Uttarakhand : An Economic perspective 89
*—Deepak Kumar*

11. Migration in the Uttarakhand Hills Challenges and Consequences 99
*—Dr. Puran Joshi, Dr. Himani Bisht*

12. Internal Migration: An Overview (Julys 2020- June 2021) 110
*—Tanya Varshney, Dr. Deepak Kumar Tamta*

13. Role of Employment to prevent Migration from Uttarakhand: (An assessment of current state of employment and future opportunity) 117
*—Sanjay Kumar, Dr. Parul Bhardwaj*

14. Mental Health of Adolescents working as Labourers in Leather Industry 137
*—Ruchi Kakkar*

नमूना SAMPLE

# सहायक सूची

1. **डॉ० योगेश मैनाली,** सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र, एस०एस०जे० परिसर, अल्मोड़ा।
2. **प्रो० इला साह,** विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, सोबन सिंह जीना परिसर, अल्मोड़ा।
3. **डॉ० ललित चंद्र जोशी,** पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, सोबन सिंह जीना परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखंड)।
4. **प्रो० प्रीति आर्या,** हिंदी विभाग, सो0 सिं0 जी0 वि0वि0, परिसर, अल्मोड़ा।
5. **डॉ० आशा शैली,** कुमाउनी भाषा विभाग, सो० सिं० जी० वि० वि०, परिसर अल्मोड़ा।
6. **डॉ० श्वेता चनियाल,** सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, एस० एस० जे० विश्वविद्यालय परिसर, अल्मोड़ा।
7. **सचिन कुमार,** शोध छात्र, अर्थशास्त्र विभाग, सोबन सिंह जीना परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)।
8. **डॉ. दीपक कुमार टम्टा,** सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र विभाग, सोबन सिंह जीना परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)।
9. **मोहित खर्कवाल,** शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा।
10. **डॉ० पी० के० भट्ट,** विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग ल०सिं०म० परिसर, पिथौरागढ़ सो०सिं०जी० विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा।
11. **सतीश चन्द्र जोशी,** शोध छात्र, भूगोल विभाग, ल०सिं०म० परिसर, पिथौरागढ़, सो०सिं०जी० विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा।

SAMPLE

12. **विपिन चन्द्र टम्टा,** शोध छात्र, राजनीति शास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी।

13. **अलका आर्या,** असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय, पाटी (चम्पावत)।

14. **डॉ. लता आर्या,** सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय कांडा, बागेश्वर, उत्तराखण्ड।

15. **डॉ. बलदेव राम,** सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, एम० बी० पी० जी० कालेज हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड।

16. **Deepak Kumar,** Research Scholar, Department of Economics, S.S.J. University, Almora.

17. **Dr. Puran Ch. Joshi,** Assistant Professor, Department of Geography, S.S.J. University, Almora, Uttarakhand.

18. **Dr. Himani Bisht,** Assistant Professor, Department of GIS & Remote Sensing, S.S.J. University, Almora, Uttarakhand.

19. **Tanya Varshney,** Research Scholar, Department of Economics, S. S. J. Campus, Almora (Uttarakhand).

20. **Dr. Deepak Kumar Tamta,** Assistant Professor, Department of Economics, S. S. J. Campus, Almora (Uttarakhand).

21. **Sanjay Kumar,** Research Scholar, Department of Economics, G. P. G. C. Syalde.

22. **Dr. Parul Bhardwaj,** Assistant Professor, Department of Economics, G. P. G. C. Ranikhet.

23. **Ruchi Kakkar,** Department of Psychology, S.S.J. University, Almora Uttatakhand.

नवीन SAMPLE

# 1

# प्रवास ( Migration ) की अवधारणा का विश्लेषण

*डॉ० योगेश मैनाली*
*प्रो० इला साह*

SAMPLE

## सारांश

मनुष्य के एक सामाजिक प्राणी होने के नाते उसकी अनेक आवश्यकताएँ होती हैं। जिसमें प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक आवश्यकताएँ शामिल हैं। प्राथमिक आवश्यकताओं को मूल आवश्यकता कहते हैं। मनुष्य की मूल आवश्यकताओं में रोटी, कपड़ा एवं मकान प्रमुख आवश्यकताएँ हैं। ये सब मनुष्य के जीवन निर्वाह के लिए अति आवश्यक होते हैं। ये मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताओं में शामिल होती है। मनुष्य को अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अर्थ की जरूरत होती है, जिसके लिए मनुष्य नौकरी, कृषि, व्यवसाय, पशुपालन, बागवानी, स्वरोजगार एवं न जाने कितने अनगिनत कार्य करते हैं। जिससे मनुष्यों का जीवन निर्वाह होता है। प्रश्न उठता है कि क्या मनुष्य जहाँ पर अपने परिवार के साथ रहता है उसे वहाँ पर रोजगार के अवसर प्राप्त हैं? यदि रोजगार के अवसर प्राप्त हैं तो क्या वो उन रोजगार के संसाधनों से अपना और अपने परिवार का जीवन निर्वाह कर पाता है? क्या गाँवों में पर्याप्त रोजगार के संसाधन मौजूद हैं? क्या

गाँवों में प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार मिल पाता है? क्या वर्ष भर ग्रामीणों को उनके गाँवों में रोजगार मिल पाता है? क्या रोजगार के लिए लोगों को अपने घरों से बाहर जाना पड़ता है? इन सब प्रश्नों का नाता प्रत्येक मनुष्य से जुड़ा हुआ है, जो अपनी आर्थिक क्रियाविधि के संचालन के लिए कोई न कोई कार्य करता है। जिससे वे अपने व अपने परिवार का भरण-पोषण कर पाने में सक्षम हो पाता हैं।

इस बात से हम भली-भाँति वाकिफ हैं कि भारत की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में रहती है। गाँवों में न तो उद्योग धंधो होते हैं और न ही पर्याप्त रोजगार के संसाधन। कुल मिलाकर लोगों को रोजगार, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए नगरों, शहरों एवं महानगरों का रूख अपनाना पड़ता है। इस प्रकार अपनी जन्मभूमि को छोड़कर दूर शहरों में रोजगार के लिए मनुष्यों को जाना पड़ता है। धीरे-धीरे ये सब अस्थायी तथा स्थायी तौर पर शहरों, महानगरों एवं नगरों में बस जाते हैं, और अपने गाँवों को अस्थायी और पूर्णतः छोड़ देते हैं। इस प्रक्रिया को प्रवास यानि माइग्रेशन के नाम से जाना जाता है।

## प्रस्तावना

प्रत्येक मनुष्य को शिक्षा, रोजगार और उत्तम स्वास्थ्य की नितान्त आवश्यकता होती है। ये सभी जीवन के अनिवार्य घटक होते हैं। राज्य अपने नागरिकों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के अवसरों की उपलब्धता को प्रदान करवाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। क्योंकि ये सब प्रत्येक व्यक्ति के मूलभूत अधिकार हैं। इनके बिना विकसित राज्य की संकल्पना कर पाना भी संभव नहीं है। ये विकास के मुख्य पायदान हैं। भारत एक विशाल देश है, भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या आज भी गाँवों में रहती है। गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के साधनों की उतनी उत्तम व्यवस्था नहीं है, जितनी नगरों एवं महानगरों में होती है। अधिकांश ग्रामीण जनसंख्या शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के लिए अपने गांवों से दूर नगरों एवं महानगरों में पलायन करते हैं।

इनमें अधिकांश लोग रोजगार के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं। इस प्रक्रिया को प्रवास (माइग्रेशन) की प्रक्रिया के नाम से जाना जाता है।

प्रवास क्या है? प्रवास को हिंदी में पलायन, प्रवासन, देशान्तरण एवं अंग्रेजी में इसे माइग्रेशन के नाम से जाना जाता है। प्रवास या माइग्रेशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें लोगों द्वारा अपने मूल स्थानों से दूसरे स्थानों पर जाकर स्थायी या अस्थायी रूप से निवास किया जाता है। इस प्रक्रिया में एक क्षेत्र विशेष के लोग, व्यक्ति, व्यक्तियों के समूह और समुदाय अपने मूल निवासों को छोड़कर दूसरे क्षेत्रों में अस्थायी या स्थायी रूप में रहने लगते हैं। इस प्रकार हम कह सकते है कि व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूहों द्वारा स्थायी अथवा अर्द्धस्थायी रूप से आवास के निश्चित दूरी में परिवर्तन को प्रवास कहा जाता है। यह लोगों द्वारा रोजगार, शिक्षा एवं अच्छी स्वास्थ्य सुविधाओं की प्राप्ति के लिए किया जाता है।

## प्रवास के कारण

हालांकि प्रवास के लिए अनेक कारण जिम्मेदार हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं उच्च जीवन स्तर की कामना प्रवास के कारणों में प्रमुख कारण हैं। सामान्यतया प्रवास के कारणों को चार वर्गों में विभाजित किया जाता जा सकता है।

## आर्थिक कारण

आर्थिक कारणों में रोजगार प्रवास का एक प्रमुख कारण है। रोजगार संबंधी कारणों में किसी क्षेत्र विशेष में रोजगारों की उपलब्धता लोगों को उस क्षेत्र विशेष की तरफ आकर्षित करती है। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) और इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन डेवलपमेंट (IHD) की रिपोर्ट "इण्डिया ऐम्प्लॉयमेंट रिपोर्ट 2024" के अनुसार भारत में 2021 के दौरान सभी प्रवासियों में से करीब 10.7 प्रतिशत लोगों ने रोजगार कारणों से पलायन किया था। देश में 49.6 फीसदी पुरूषों के पलायन के लिए रोजगार और उससे जुड़े कारण जिम्मेदार थे। रोजगार के लिए पलायन करने वालों का यह अनुपात महिलाओं में बेहद कम महज 1.7 फीसदी था। लोगों के द्वारा रोजगार के लिए प्रवास करने वाले में राज्यों में, दिल्ली राज्य में सबसे ज्यादा प्रवास किया गया है। यानि दिल्ली में सबसे ज्यादा लोग रोजगार के लिए गये हैं। रोजगार के लिए प्रवास, करने वाले 14 राज्यों में पुरूषों की पसन्द वाले राज्यों में प्रवासियों के

प्रतिशत का विवरण राज्यवार तालिका 1.1 में प्रस्तुत किया गया है।

**तालिका 1.1**
**रोजगार के लिए प्रवास किये जाने वाले राज्यों में पुरूषों के प्रतिशत का विवरण**

| क्र0सं0 | रोजगार के लिए प्रवासियों की पसंद वाले राज्यों का विवरण | रोजगार के लिए इन राज्यों में प्रवास करने वालों में पुरूषों का प्रतिशत |
|---|---|---|
| 1 | दिल्ली | 87.1 |
| 2 | कर्नाटक | 63.2 |
| 3 | महाराष्ट्र | 59.9 |
| 4 | तेलंगाना | 56.2 |
| 5 | छत्तीसगढ़ | 59.4 |
| 6 | असम | 54.7 |
| 7 | गुजरात | 51.4 |
| 8 | मध्य प्रदेश | 50.9 |
| 9 | तेलंगाना सहित आंध्र प्रदेश | 50.2 |
| 10 | पंजाब | 44.4 |
| 11 | बिहार | 39.0 |
| 12 | जम्मू कश्मीर | 38.3 |
| 13 | केरल | 37.2 |
| 14 | उत्तर प्रदेश | 35.9 |

रिपोर्ट से स्पष्ट है कि रोजगार के लिए घर छोड़कर सबसे ज्यादा पुरूष दिल्ली में प्रवास कर रहे हैं। रोजगार के लिए उत्तर प्रदेश पहुँचने वाले पुरूषों का आंकड़ा सबसे कम 35.9 फीसदी दर्ज किया गया है।

## सामाजिक एवं धार्मिक कारण

महिलाओं का विवाह प्रवास का एक कारण है। महिलाएँ विवाह के बाद जब दूसरे स्थान पर जाकर रहने लगती हैं तब वे प्रवास करती हैं। महिलाओं के बीच प्रवासन की दर जो वर्ष 2000 के दौरान 42.4 फीसदी दर्ज की गयी थी



SAMPLE

वह 2021 में 47.9 फीसदी तक पहुँच गई।1 धार्मिक कारण भी कभी-कभी प्रवास के लिए जिम्मेदार कारण माने जाते हैं। धार्मिक कारणों में धार्मिक, नस्लीय, जातीय आधारों पर हिंसा एवं असुरक्षा की भावना लोगों को अपने स्थानों को छोड़कर दूसरे स्थानों पर रहने को मजबूर करती है। कश्मीरी पंडितों द्वारा जम्मू कश्मीर से किये गये पलायन का कारण धार्मिक कारण ही था।

## राजनैतिक कारण

प्रवास के लिए कभी-कभी राजनैतिक कारक भी जिम्मेदार होते हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् यह प्रवास का एक प्रमुख कारण रहा है। यहूदी, फिलीस्तीनी, भारतीय, पाकिस्तानी एवं बांग्लादेशी शरणार्थियों द्वारा बड़े पैमाने पर प्रवास किया गया था।1

## बलपूर्वक निष्कासन

जब किसी देश में रहने वाले नागरिकों में से कुछ नागरिकों को समुदाय, नस्ल एवं जाति के आधार पर बलपूर्वक उस देश से निष्कासित किया जाता है तब इसे बलपूर्वक पलायन करवाना कहते हैं। पोल पॉट के काल में कम्बोडिया में लोगों का नगरों से गाँवों की ओर प्रवास एवं वियतनाम से चीनी लोगों का निष्कासन इसका उदाहरण है।[1] इन सब कारणों के अतिरिक्त प्रवास के लिए अन्य कारण भी जिम्मेदार हैं, किसी क्षेत्र विशेष की उन्नत प्रौद्योगिकी, शिक्षा एवं स्वास्थ्य की समुचित सुविधाऐं, लोगों की उच्च जीवन स्तर की इच्छा, महिलाओं का विवाह एवं किसी स्थान विशेष के संसाधनों पर लोगों का अत्यधिक दवाब प्रवास के लिए अन्य जिम्मेदार कारण हैं।

प्रवास के प्रकार-प्रवास मुख्यत: तीन प्रकार से होता है।

1. **स्थायी प्रवास ( Permanent Migration )**- जब कोई व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह अपने मूल निवास को छोड़कर दूसरे स्थान पर स्थायी रूप से बस जाते हैं, तब इसे स्थायी प्रवास कहते हैं।

2. **अस्थायी प्रवास ( Temporary Migration )**- इस प्रक्रिया में व्यक्ति अस्थायी रूप से अपने मूल स्थानों को छोड़कर दूसरे स्थानों पर जाते है, लेकिन बीच-बीच में अपने मूल निवास स्थानों में आते-जाते रहते

हैं। यह प्रवास अस्थायी रूप से होता है। इसलिए इसे अस्थायी प्रवास भी कहते है।

3. **क्रमिक प्रवास ( Sequent Migration )**- जब कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह क्रमिक रूप से अपने गाँवों से बड़े गाँवों की ओर, बड़े गाँवों से कस्बों की ओर, कस्बों से शहरों की ओर तथा शहरों से महानगरों की ओर प्रवास करते हैं तब इसे क्रमिक प्रवास कहते हैं। छोटे गाँव-बडे गाँव-कस्बों-शहरों-महानगरों।

स्थानांतरण की दिशा के आधाार पर प्रवास 5 प्रकार से होता है-

1. गाँव से नगर- इसमें लोग गाँवों से नगरों की ओर प्रवास करते हैं।
2. नगर से नगर- एक नगर से दूसरे नगर में गमनागमन को नगर से नगर प्रवास करना कहते हैं।
3. गाँव से गाँव- अपने गांव को छोड़कर दूसरे गाँव में प्रवास करना इसमें शामिल है।
4. नगर से गाँव- नगरों को छोड़कर गाँवों में प्रवास करना नगरों से गाँवों का प्रवास कहलाता है।
5. अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास- जब अपने देश को छोड़कर व्यक्ति दूसरे देशों में प्रवास करते हैं तब इसे अंतराष्ट्रीय प्रवास कहते हैं।

## प्रवास के लिए जिम्मेदार कारक

प्रवास को प्रभावित करने वाले कारकों में मुख्यत: दो कारक जिम्मेदार होते हैं। आकर्षण कारक (Pull Factor) तथा अपकर्षण कारक (Push Factor) लोगों को प्रवास के लिए आकर्षित और मजबूर करते हैं। रोजगार की सुविधाएँ उत्तम स्वास्थ्य सुविधाएँ, शिक्षा की सुविधाएँ, अच्छा क्लाइमेट, अच्छा पर्यावरण एवं अच्छी ट्रांसपोर्ट सुविधाएँ लोगों को उस स्थान में प्रवास के लिए आकर्षित करती हैं। किसी क्षेत्र विशेष या स्थान विशेष से प्रवास करने के लिए अपकर्षण कारक (Push Factor) लोगों को मजबूर करते हैं, दबाव डालते हैं प्रवास के लिएँ उदाहरण के तौर पर कोई एक व्यक्ति